xInternational Journal of Humanities and Social Science Research
ISSN: 2455-2070; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 05-08-2020; Accepted: 20-08-2020; Published: 06-09-2020
www.socialsciencejournal.in
Volume 6; Issue 5; 2020; Page No. 11-13

महात्मा गाँधी के समाजवादी व मानवतावादी विचारों का विश्लेषण

हेमलता बोरकर वासनिक

सहायक प्राध्यापक, समाजशास्त्र अध्ययनशाला, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

सारांश

समाजवादी एवं मानवतावादी विचारो की अवधारणा एक व्यापक अवधारणा है इसके अंर्तगत लैंगिक समानता, समानाधिकार समावेशी विकास, आर्थिक समानता एवं सदाचार पूर्ण व्यवहार को रखा जा सकता हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व देश में काफी असमानताएं थी रंगभेद, जातिवाद, छूआछूत, लैंगिक भेदभाव, शैक्षणिक असमानता से जुड़ी घटनाएं आम बात थी जिसके कारण से एक वर्ग विशेष लोगों का ही समाज पर प्रभुत्व था तथा समाज दो वर्गों में बंट गया था शोषक एवं शोषित वर्ग। इससे समाज में काफी हिंसक घटनाएं घटित होती थी तथा उन घटनाओं का विरोध करने की किसी में हिम्मत भी नहीं होती थी, और लोग चुपचाप भय के कारण घटना का सामना करते थे। उस समय न्याय व्यवस्था एक दम जटिल थी केवल विशेष वर्ग का व्यक्ति ही इसका लाभ ले सकता था, आम व्यक्तियों के लिए न्याय व्यवस्था का कोई महत्व नहीं था। इन विसंगतियों को जब सामाजिक कार्यकर्ताओं जैसे राजाराम मोहन, ईश्वर चंद्र विद्यासागर, केश्वचंद्र सेन, डॉ भीमराव अम्बेडकर, महात्मा गांधी एवं रानाडे, सरदार वल्लभ भाई पटेल, स्वामी दयानंद सरस्वती ने एक साथ मिलकर इन विसंगतियों को समाज से दूर करने का प्रयास किया। महात्मा गांधी ने सामाजिक उत्थान से संबंधित कई कार्य किए जिनमें से स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग, सामाजिक अस्पृस्यता की रोकथाम, महिला शिक्षा, महिला सशक्तिकरण एवं जन स्वाधिनता से संबंधित कार्य है। इसके अलावा मानवतावाद एक समाजवाद पर भी इन्होंने कार्य किए हैं।

प्रस्तुत अध्ययन में गाँधी जी के समाजवादी एवं मानवतावादी विचार धाराओं का विश्लेशण करने का प्रयास किया हैं।प्रस्तुत शोधपत्र् द्वितीयक स्त्रोंतो पर आधारित हैं।

मूल शब्द: समानता, स्वतंत्रता,सामाजिक न्याय, अहिंसा एवं मानवता

प्रस्तावना

महात्मा गाँधी एक सामाजिक विचारक, समाजसेवक एवं दार्शनिक थे। सामाजिक विचारक एवं दार्शनिक होने के कारण इन्होंने सामाजिक विकास हेतु समाजवादी एवं मानवतावादी विचारकों का सुत्रपात किया। इनका मनना था कि जब तक समाज से असमानता, अराजकता एवं शोषण का अंत नहीं होगा तब तक समाज का विकास होना असंभव है, इसलिए इन्होंनें जमीदारी प्रथा, मालगुजारी प्रथा अस्पृश्यता, लैंगिक शोषण एवं वर्ग भेद को दूर करने के लिए अथक प्रयास किया, इस हेतु आंदोलन किया एवं अनशन पर बैठे। इनके आंदोलन का केवल एक मकसद होता था, वर्गभेद, लैंगिक असमानता, महिला शोषण एवं विदेशी वस्तुओं का विरोध करना। वे महिला शिक्षा, सामाजिक एवं लैंगिक समानता के पक्ष-धर थे। वे कुटीर उद्योगों के विस्तार एवं स्वदेशी वस्तुओं के उत्पादन एवं उपभोग को बढावा देना चाहते थे इस हेतु इन्होंने चरखा का प्रचार प्रसार किया तथा खादी वस्त्रों के उपभोग को प्रोत्साहित किया।

गाँधी जी का सामाजिक विकास में बहुत अधिक योगदान है, इन्होंने समाज के हर तबके के व्यक्तियों के लिए उनकी सामाजिक-आर्थिक दशा सुधारने के लिए अथक प्रयास किये। इन्होंने कार्लमार्क्स के मार्क्सवादी चिंतन एवं आंबेडकर के समाजवादी विचारों को सामाजिक विकास का आधार स्तंभ माना है। इन्होंने न केवल पूंजीवादी अर्थव्यवस्था का विरोध किया है अपितु आधुनिक सभ्यता का भी विरोध किया। वे मशीनीकृत उत्पादन कार्य के विरोधी थे इसलिए इन्होंने चरखा को अपनाया और खादी के वस्त्रों का स्वयं उत्पादन करने लगे। महात्मा गाँधी स्वावलंबी बनने को कहते थे, उनका मानना था कि यदि ग्रामों में लोग स्वयं के द्वारा अपनी जरुरतों को पूरा करने हेतु उत्पादन का कार्य करेंगें तो ग्रामीण बेरोजगारी दूर होगी तथा समाज का विकास होगा। गाँधी जी सदैव समाजवादी एवं मानवतावादी विचारों पर चलने को आग्रह किया करते थे।

उद्देश्य-प्रस्तुत शोध पत्र में गाँधी जी के समाजवादी एवं मानवतावादी विचारधाराओं की विवेचना की गयी है।

अध्ययन पद्धति- समाजवादी एवं मानवतावादी विचारधाराओं का विश्लेषण द्वितीयक तथ्यों पर आधारित है, इसके लिए उपलब्ध साहित्य, पुस्तकों एवं समाचार पत्रों से प्राप्त द्वितीयक सामग्री का विश्लेषण किया गया है।

समाजवादी व मानवतावादी विचारों का विश्लेषण - गाँधीजी ने समाजवादी विचारों का सामाजिक परिप्रेक्ष्य में विश्लेषण किया उनके अनुसार समाजवादी विचार वह है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति के लिए जीवन की अनिवार्य मूलभूत आवश्यकता को प्राप्त करने के तरीके सम्मिलित होते हैं इन तरीकों के मदद से आम आदमी अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति सरलता एवं सहजता से कर लेता है। समाजवादी समाज की स्थापना होने से संपत्ति का समान वितरण हो सकेगा इससे कोई भी व्यक्ति न अधिक संपन्न होगा और न ही अधिक गरीब सबको जीवकोपार्जन करने के लिए अनिवार्य वस्तुएँ आसानी से उपलब्ध हो जाएंगी इससे समाज से ऊंच-नीच का वर्गभेद मिटेगा तथा समाज में समानता की स्थिति उपन्न होगी। गाँधी जी ने समाज में हर वर्ग को समानाधिकार मिलने की बात कही है, उनका कहना है कि इस पृथ्वी में सभी व्यक्तियों में एक समान रंग का रक्त का प्रवाह होता है। सभी में किसी न किसी प्रकार की बौध्दिक क्षमता जरुर पायी जाती है तथा उसका उपयोग उनकी बुद्धि के अनुकूल करना चाहिए। गाँधी जी ने सभी वर्ग को समान अधिकार दिलाने के लिए अहिंसात्मक तरीकों का प्रयोग किया तथा वे इस प्रयोग में सफल भी हुए यही कारण है कि समाज में अब सभी व्यक्तियों को ऐसे अधिकार देने की बात कही गयी है।

ज़ॉन रस्किन की रचना अन टू दिस लास्ट के द्वारा गाँधी जी ने सर्वोदय आंदोलन की चर्चा की थी सर्वोदय आंदोलन का मुख्य उद्देश्य समाज के प्रत्येक व्यक्ति के उन्नति एवं विकास से है। इन्होनें सत्य एवं अहिंसा के माध्यम से सर्वोदय का सिद्धांत दिया। गाँधी जी बुनियादी शिक्षा के पक्षधर थे। महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए इन्होंने महिला कौशल योजना को प्रोत्साहित किया इन्होंने मानवाधिकार संबंधी विचारों की नींव रखी। इनकी विचारधारा के प्रशंसकों में मार्टिन लूथर किंग, दलाईलामा,नेलसन मंडेला आनसान सूकी एवं बराक ओबामा

प्रमुख थे। इन्होंने शांति एवं सद्मार्ग के माध्यम से अपने लक्ष्यों को पाने पर जोर दिया। महात्मा गाँधी का मानवतावादी संबंधी विचार जब मनुष्य को बराबर का दर्जा दिलाने का बात करता है तथा सभी के साथ समतामूलक व्यवहार करने की अपेक्षा करता है। गाँधी जी का समाजवाद रस्किन, टाल्सटाय, थोरो, कार्ल मर्क्स, लेनिन जैसे दार्शनिकों के विचारों से मिलाजुला है। गाँधी जी औद्योगीकरण के प्रबल विरोधी थे वे मशीनीकृत विदेशी वस्तुओं के निर्माण के विरोधी थे। वे कहते थे कि यदि हम विदेशी वस्तुओं का उपयोग करेंगे तो देश में बेकारी एवं बेरोजगारी बढ़ेगी लोगों का शोषण होगा तथा आम नागरिक की सामाजिक आर्थिक दशा काफी दयनीय होती चली जाएगी तथा इससे पूंजीवादी समर्थकों का मनोबल बढ़ेगा इसलिए इन्होंने समाजवादी दृष्टिकोण की पहल की जिसका मुख्य लक्ष्य लोकतंत्रात्मक समाज की स्थापना करना था। समाजवादी दृष्टिकोण एक ऐसी व्यवस्था को अपनाने पर बल देती हैं जिसमें पूंजी या धन का स्वामित्व एवं वितरण समाज या जनता के नियंत्रण में हो। यह पूंजी पर किसी निजी व्यक्ति के स्वामित्व का विरोध करता है।

19 वीं शताब्दी में समाजवादी विचारधारा को लाने का मुख्य उद्देश्य व्यक्तिवादिता का विरोध करना तथा मानवतावादी विचारों को प्रोत्साहित करना था। समाज में सामूहिक हित की भावना को लाना था, सबका समान विकास करना था मजदूर वर्ग एवं पिछड़े वर्ग को शोषण से मुक्ति दिलाना था तथा इन्हें उनके अधिकारों को दिलवाना था जिससे कि वे अपना एवं अपने परिवार का विकास कर सकें। लेनिन ने स्टेट ऑफ रेवोल्यूशन में माक्र्सवाद के समाजवादी विचारधारा को बतलाने का प्रयास किया हैं।1

गाँधी जी ने ट्रस्टीशिप का सिद्धांत दिया था जिसमें इन्होंने पूंजीपतियों से संपत्ति हड़पने के बजाए उन्हें ट्रस्ट में बदलने का मौका देते थे। गाँधी जी ने ग्रामीण विकास के लिए खादी एवं ग्रामोउद्योग की स्थापना पर जोर दिया तथा मशीनीकरण पर आधारित औद्योगीकरण का विरोध किया वे भारत की अर्थव्यवस्था को मजबूत करना चाहते थे इसलिए वे कृषि आधारित अर्थव्यवस्था को सुदृण करना चाहते थे।2 भारती,के.एस.;(1991) ने अपने शोध पत्र में पाया कि गाँधी जी ने औद्योगीकीकरण का विरोध किया था जो मशीन सर्वसाधारण के पहुँच में उनका प्रयोग किया जा सकता है ताकि सभी व्यक्ति मशीनों का उपयोग कर अपना विकास कर सके।3 नमिता, एन.(2014) ने अपने शोध पत्र में पाया कि गाँधी जी नियोजित विकास के माँडल को अपनाना चाहते थे ताकि देश मजबूत एवं समन्वित हो सके।4

गाँधी जी ने यंग इंडिया के पेपर 25 अप्रैल 1929 में लिखा है कि गाँवों को सुधार करके समाज का विकास किया जा सकता है इसके लिए स्वस्थ सामंजस्य एवं एकता बनाये रखने का जरूरत है।5 संरक्षिता का सिद्धांत में गाँधी जी कहते हैं कि हमें अपने प्राकृतिक संपदा की रक्षा करनी हैं, इसके लिए हमें अपने संसाधनों का देखभाल करके उपयोग करना है, खासतौर से कृषि योग्य भूमि को संरक्षित रखने का प्रयास करना है। इसे पूंजीपति वर्ग के हाथों से बचाना है ताकि इस जमीन पर उद्योगों की स्थापना न हो सके परंतु आज गाँधी जी के विचारों पर प्रहार सा हो रहा है न खादी स्वदेशी वस्तुओं का विस्तार हुआ, न ही कृषि भूमि का संरक्षण।6

गाँधी जी का कथन है कि व्यक्ति को हमेशा जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए। इसके लिए माता-पिता को अपने बच्चों को सशक्त बनाने की जरुरत है, बच्चों को एक साथ रहने की सीख देना तथा छोटे-बच्चों का माता-पिता से अलग रहकर शिक्षा लेने की बात का वे पूर्णतः विरोध करते हैं, उनका मानना है कि छोटे बच्चों की शिक्षा पूर्णतः घर पर रहकर विद्यालय भेजकर दिया जाना चाहिए, इससे बच्चे अपने माता-पिता एवं संबंधियों के संपर्क से अनौपचारिक ज्ञान का अर्जन करने के साथ-साथ विद्यालय से औपचारिक ज्ञान की प्राप्ति करेंगें। ये दोनों ज्ञान प्राप्ति के स्रोतों के द्वारा बालक के व्यक्तित्व का संपूर्ण विकास हो सकेगा। जहाँ बच्चा अपने परिवार से संस्कृति, परंपराओं एवं धर्म का ज्ञान प्राप्त करेगा इसके साथ ही विद्यालय से व्यावहारिक एवं सैद्धांतिक दोनों प्रकार के ज्ञान का अर्जन कर सकेगा। गाँधीजी कहते हैं कि बच्चों को शारीरिक श्रम की शिक्षा घर से प्रारंभ कर देनी चाहिए इससे बच्चा कर्मठ बनेगा, इसके लिए इन्हें जीवनोपयोगी शिक्षा देना अनिवार्य है यह शिक्षा बालकों में मानवीय मूल्यों का विकास करेगा। इस प्रकार गाँधी जी का सामाजिक विकास की अवधारणा लोक केंद्रित दर्शन पर आधारित है।7

गाँधीजी मानवतावादी दार्शनिक एवं विचारक के रूप में जाने जाते हैं वे मनुष्य के साथ मानवतापूर्ण व्यवहार किए जाने की अनुशंसा करते हैं, वे समाज से पूर्णतः हिंसा को समाप्त करने की अनुशंसा करते हैं, उनका मानना है कि जब तक समाज में हिंसा होंगी तब तक समाज में मानव के साथ क्रूरता पूर्ण व्यवहार होता रहेगा इसलिए हिसांत्मक तरीकों से दूर रहने की बात गाँधीजी द्वारा कहीं गयी है। हिंसा में वे व्यक्ति के द्वारा कहे गये उन कथनों एवं विचारों को शामिल किया है,जो जानबूझकर दूसरे व्यक्ति को ठेस पहुंचाने के मकसद से किया गया हो तथा ऐसी प्रताड़ना को हिंसा माना है,जो स्वार्थ हित में दूसरे का शारीरिक एवं आर्थिक नुकसान के लिए किया गया हो। अब्राहम मॉस्लो ने 1954 में मानवतावादी अधिगम का सिद्धांत दिया उनका मानना था कि मनुष्य को यदि कुछ सीखाना है तो उनके साथ मनुष्यता पूर्ण व्यवहार किया जाना चाहिए, पशुओं के समान नहीं तथा मनुष्य के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, सुरक्षात्मक एवं आत्म सम्मान को पूर्ण करने वाली दशाएँ उन्हें प्रदान करने की जरूरत है तभी समाज में मानवतावाद का विकास होगा।

महात्मा गाँधी के समाजवादी व मानवतावादी विचारों की आलोचना

गाँधी जी सुधारवादी चिंतक थे, तो कार्ल मार्क्स लेनिन एवं आंबेडकर परिवर्तनवादी विचारक थे। कार्ल मार्क्स, लेनिन एवं आंबेडकर समाज में परिवर्तन लाने की मांग करते हैं परिवर्तन का संबंध रूढ़िवादी विचारधाराओं एवं परंपराओं से है जो समाज पर सदियों से अपना प्रभाव बनाये हुए है जिसके कारण समाज विकास नहीं कर पा रहा। परिवर्तनवादी समाज में आमूलचूल परिवर्तन चाहते हैं जबकि सुधारवादी समाज में केवल लोगों को सुधारना चाहते हैं, वे चाहते हैं कि लोग सच बोले, हिंसा न करे, ईमानदारी पूर्वक अपना कार्य करें दूसरों की आलोचना न करें परंतु ये बाते केवल सैद्धांतिक रूप में अच्छी लगती हैं व्यावहारिक रूप में इसे अमल करना असंभव सा दिखलाई पड़ता है तभी तो देश में अनाचार, अत्याचार, शोषण एवं हिंसक घटनाएँ घटीत हो रही हैं। गाँधी जी ने हिंद स्वराज में पश्चिमी सभ्यता का विरोध किया है वे स्वदेशी संस्कृति को आत्मसात करने की प्रेरणा देते हैं।8 वे अहिंसा और प्रेम को सब रोगों की दवा मानते हैं उनका मानना था कि सत्य और अहिंसा के माध्यम से व्यक्ति बड़ी से बड़ी लक्ष्य हासिल कर सकते हैं। गाँधी जी आध्यात्म पर बल देते हैं। वे कहते कि ईश्वर से प्रेम करो इससे आपके अंदर के सारे विकार नष्ट हो जाएंगे और इससे व्यक्ति में सदगुणों का विकास होगा जिससे व्यक्ति बुरे कार्य करने से डरेगा और समाज में शांति व्यवस्था बनी रहेगी9 जबकि कार्ल मार्क्स एवं आंम्बेडकर का मानना है कि ईश्वर नाम की कोई चीज नहीं है व्यक्ति का कर्म ही उसे सद् गुणॉ तक पहुंचाता है यदि समाज में लोगों को शोषण से बचाना है तो समाज के उन लोगों को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करो और उन्हें अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करने बोलो क्योंकि जब तक वह संघर्ष नही करेंगें तब तक उन्हें न्याय नहीं मिलेगा। यही कारण है कि कार्ल मार्क्स् एवं लेनिन ने संघर्ष का सिद्धांत दिया है जिसका मुख्य उद्देश्य न्याय पर आधारित समाजवादी समाज की स्थापना करना है। 1908 में गाँधी जी ने सर्वोदय आंदोलन किया जिसका मुख्य लक्ष्य सबका विकास, सबकी प्रगति से है। वे समाज को प्रगति के पथ पर ले जाना चहते थे इसलिए इन्होंने स्वदेशी वस्तुओं के उत्पादन एवं उपभोग पर जोर दिया।10 इन्होंने महिला शिक्षा को प्रोत्साहन दिया वे समाज से सब प्रकार की विसंगतियों को दूर करने की बात करते हैं इसके लिए वे हिंदू, मुस्लिम, सिक्ख इसाई, आपस में सब भाई-भाई का नारा देते हैं, परंतु कार्ल मार्क्स का मानना है कि जब तक व्यक्ति का उत्पादन के साधनों एवं उत्पादित वस्तु पर स्वयं का स्वामित्व नहीं होगा व्यक्ति का विकास असंभव है इसलिए वे उत्पादित वस्तु एवं उत्पादन की तकनीक पर सामान्यजनों के अधिकारों की मांग करते हैं।11गाँधी जी स्वदेशी वस्तुओं खासकर खादी के कपड़ों को अपनाने की बात करते हैं जबकि मार्क्स् का कहना है कि वस्तुएँ कहीं की भी हो पर उसकी पहुँच आम आदमी तक हो जिससे वह वस्तुओं का सरलता पूर्वक उपयोग कर सके। गाँधीजी का समाजवादी दृष्टिकोण

आदर्शवादी होने के कारण समाज में जगह नहीं बना पायी।12 इस प्रकार हम कह सकते है कि गाँधीजी आदर्शात्मक समाजवाद के जनक है तथा कार्ल मार्क्स वैज्ञानिक समाजवाद के जनक है।

संदर्भ सूची

1. वाग़मारे, सुर्यकांत (2004): गाँधीज़ थॉटस ऑन डेवलपमेंट: क्रिटिकल अप्रिसल् दी न्यु ग्लोबल डेवेलोप्मेंट् – वॉलु. 20, पृष्ठ, 55-70.
2. इसील, कज़ुया (2004) दी सोसिओ- इकोनोमिक थॉटस ऑफ़ महात्मा गाँधी: एज़ एन ओरिज़िन ऑफ अल्ट्रर्नेटिव डेवेलोप्मेंट – रिव्यु ऑफ सोसिय़ल इकोनोमिक वॉलु. पृष्ठ.297-312.
3. भारती,के.एस.(1991) : द सोसिय़ल फिलॉस्फी ऑफ महात्मा गाँधी, कांसेप्ट पब्लिसिंग़ कम्पऩी, न्यु-दिल्ली, पृष्ठ 130-137.
4. नामिता. एन. (2014) : गाँधीस विज़न ऑफ डेवेलोप्मेंट रिलेव्स फॉर 21st सेंचुरि, इण्डिएन ज़नॅल ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशऩ वॉलु. 9 नं.-1.
5. यंग इंडिया, 25 एप्रिल 1929.
6. दासगुप्ता, सुजाता, (1989): द कोर ऑफ गाँधी सोसिय़ल एंड इकोनोमिक थॉटस, पाल्ग्रवे,मैकमिलन. लंदन' पृष्ठ, 189-202.
7. पाटेल, आशा (2005): गाँधीएन विज़न ऑफ रुरल डेवेलोप्मेंट, डेसेंट बुक, न्यु दिल्ली.
8. गाँधी, महात्मा (2018): हिन्द – स्वराज, पेपर बैंक पब्लिसर, न्यु दिल्ली.
9. गाँधी, एम.के. (1955): माय रिलिजन, नवीन, पब्लिक़ेशन हाउस, अहमदाबाद.
10. गाँधी, एम.के. (2012): सर्वोद्य़, नवजीवन् पब्लिक़ेशन हाउस, अहमदाबाद, इंडिया, पृष्ठ, 2-77.
11. मिश्रा,के.के. (1970): सोशियल एंड पॉलिटीकल थॉटस ऑफ़ गाँधी, दी इंडियऩ ज़नॅल ऑफ पॉलिटीकल साइंस, वॉलु.31 नं. 02 - पृष्ठ. 187-193.
12. राय, रामाश्रेय (1980); सेल्फ एंड सोसाइटी; ए स्टडी इन गाँधीयन थॉट,सेज पब्लिक़ेशन प्रैवेट् लिमिटेड़, पृष्ठ. 40-180.